खगड़िया जिला (बिहार) के भूमि उपयोग का सामान्य प्रतिरूप

बिमल चन्द्र राय[1] एवं प्रो0 (डॉ0) बी0 के0 शर्मा[2]

शोधार्थी

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

[2]पूर्व संकायाध्यक्ष (सामाजिक विज्ञान)

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

उपयोग पर विचार करते हुए पाण्डेय (1980) का कथन इस प्रकार है कि भूमि विश्व का एक मात्र चिरस्थायी संसाधन है, जो मानव को भोजन से लेकर आश्रय तक आधारभूत आवश्यकता प्रदान करती है। यह अनेक मानवीय समस्याओं की समाधान करती है। विश्व के किसी छोटे या बड़े प्रदेश के अत्यंत अविकसित ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर अत्यंत विकसित शहरी क्षेत्र भू–उपयोग के प्रतिफल है।

खगड़िया जिला में अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर रहने के कारण भूमि उपयोग का अध्ययन एवं विश्लेषण और भी आवश्यक हो जाता है। खगड़िया जिला का भूमि उपयोग सामान्यतः अवस्था की ओर बढ़ रहा है। सामान्य भूमि–उपयोग का अध्ययन आठ उप– शीर्षकों में किया जा रहा हैं, जो निम्न है– शुद्ध बोया गया क्षेत्र, वन, उसर, और गैर कृषि योग्य–भूमि, स्थाई चारागाह और अन्य गोचर भूमि, विविध वृक्ष फसल और गाछी जिन्हें शृद्ध बोये गये क्षेत्र में रखा गया है। चालू परती भूमि (एक वर्ष तक) यहाँ अन्य परती भूमि (दो से पाँच वर्षें तक) बहुत कम है। अध्ययन–क्षेत्र में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 149630 हेक्टयर है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का शुद्ध बोया हुआ क्षेत्र 167114 हेक्टयर (69.50 प्रतिशत) हैं उसर और गैर कृषि योग्य बंजर भूमि, गैर कृषि कार्यों में लगाई गई भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि, स्थाई चारागाह और अन्य गोचर भूमि विविध वृक्ष फसलों और जिन्हें शुद्ध बोये गये क्षेत्र में रखा गया है और चालू परती भूमि का प्रतिशत 2.32 प्रतिशत है। गैर कृषि कार्यों में लगाई गई भूमि को दो उपविभागों में बाँटकर अध्ययन किया गया है। प्रथम स्थल क्षेत्र और दूसरा जल क्षेत्र। जहाँ क्षेत्र को पुनः दो भागों में बाँटा गया है। स्थायी जल क्षेत्र और मौसमी जलक्षेत्र। खगड़िया जिला में सर्वाधिक भूमि–उपयोग शुद्ध बोये गये क्षेत्र के अन्तर्गत आता है जिसका क्षेत्रफल 104000 हेक्टेयर है। इसके अनुपात में अन्य क्षेत्रों में भूमि–उपयोग बहुत ही कम हो रही है, जो संतुलित भूमि–उपयोग के विरूद्ध है; जो मानवीय एवं अन्य जीव जन्तुओं पर प्रतिकुल असर डालती है। पर्यावरण प्रदूषण रहित एवं मानव स्वास्थ्य के लिए कुल भूमि का 33 प्रतिशत भाग पर वन होना चाहिए, जो खगड़िया जिला में बहुत ही कम है। यहाँ कुल भूमि का मात्र 5.35 प्रशित भाग पर ही वन है। शुद्ध बोया हुआ क्षेत्र के बाद सार्वधिक भूमि गैर कृषि कार्यों में संलग्न है, जिसमें स्थल के रूप में सर्वाधिक उपयोग हो रहा और शेष जल क्षेत्र के रूप में उपयोग हो रहा है। जल क्षेत्र में भी सर्वाधिक भूमि उपयोग मौसमी जल क्षेत्र के रूप में हो रहा है और थोड़ी बहुत स्थायी जल का क्षेत्र के रूप में भूमि उपयोग हो रहा है। सर्वाधिक न्यूनतम भूमि स्थायी चारागाह और अन्य गोचर भूमि के अन्तर्गत उपयोग हो रहा है जिसका क्षेत्रफल 22800 हेक्टेयर 15.249 है। अल्प चारागाह के कारण पालतु पशुओं की स्थिति खगड़िया जिला में बड़ा ही दयनीय है। कृषि योग्य बंजर भूमि 14830 हेक्टेयर 9.91% है, जिसे प्रखण्ड द्वारा चलाये गये ग्रामीण विकास योजनाओं के द्वारा कृषि योग्य बनाने हेतु भूमि सुधार कार्यक्रम चलाये गये हैं। कुछ भूमि ऐसी है जो मात्र कुछ ही दिनों तक परती रह जाती है।

भूमि, काल, परिस्थिति के अनुकुल उपयोग में परिर्वतन होते रहता है। यह परिर्वतन प्राकृतिक संतुलन को समय समय पर बिगाड़ती रहती थी, जिसे फिर से संतुलन करना बड़ा ही मुशिकल हो जाता है। विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों में परिर्वतन से भूमि की

उपयोग में परिर्वतन हो जाता है। इसके साथ कार्यों के आधार पर भी परिर्वतन होती हैं। जैसे कृषि भूमि में बढ़ोतरी या कमी से कृषि भूमि के संघन व विस्तृत उपयोग तथा उत्पादन आदि में परिर्वतन भूमि उपयोग के परिर्वतन की महत्वपूर्ण दिशाएँ हैं।

कभी–कभी परिर्वतन किसी एक फसल की भूमि को दूसरी फसल के उपयोग में लेने से भी होता है। चारागाह भूमि को फसलों के अन्तर्गत लेने या गैर कृषि भूमि में लेने या इसके विपरीत कृषि भूमि का बेकार पड़े रहना भूमि उपयोग में परिर्वतन को परिलक्षित करता है।

तालिका : 1.1

Land use Pattern of Khagaria district (Area in hac.) Area under Agriculture

Name of Block	Total Geographical Area	Gross Cropped Area	N.SA	Area sown more than once	Cropping Intensity	Area under Forest	Area under Woodland	Area under other uses
Alauli	27367	29595	520572	9023	144	2500	3415	3711
Beldaur	22427	24167	15592	8575	155	2000	1700	2828
Chautham	16445	20747	12195	8552	170	2000	1375	2298
Gogri	26368	31652	19500	12152	162	1500	2510	4242
Khagaria	26195	–	17759	8078	145	–	2690	4596
Mansi	6948	11470	5775	5695	199	–	610	1237
Parbatta	23883	23646	12607	11039	188	2000	2530	3889
Total	149630	167114	104000	63114	161	80000	14830	22800

भूमि उपयोग का सामान्य प्रतिरूप

भूमि उपयोग का अर्थ मानवीय रूप से है, जिसका उपयोग मानव अपने पक्ष में विभिन्न रूपों से करता है। इसके अन्तर्गत सभी प्रकार की भूमि को लिया जाता है, चाहे कृषि, औधोगिक या शहरी अथवा ग्रामीण क्षेत्र ही क्यों न हों। फॉक्स (Fox 1956) के शब्दों में ''Land use is the actual and specific use to which the land surface is put in terms of inherent land use characteristics''

निहित भूमि विशेषताओं के आधार पर किसी क्षेत्र का वास्वतिक प्रयोजन के साथ उपयोग को कृषि उपयोग कहते है। अतः स्पष्ट है कि एक निश्चित प्रयोजन व उद्देश्य से भूमि का किसी भी रूप में उपयोग ही भूमि–उपयोग कहा जाता है।

वन :

खगड़िया जिला के कुल सात अंचल में से मात्र चार अंचलों में ही वन लगा हुआ है। जिसमें सर्वाधिक अलौली अंचल में है जो जिला के कुल क्षेत्रफल का 2500 हेक्टेयर (1.67 प्रतिशत) में है। इसके बाद बेलदौर एवं परबत्ता समान रूप से द्वितीय स्थान पर 2000 हेक्टेयर (1.33%) है और सबसे कम गोगरी अंचल 1500 हेक्टेयर 1% है। यहाँ का वन मॉनसूनी पतझड़ वन है। इसमें वाणिज्यिक वानिकी को भी शामिल किया गया है। समाज एवं राष्ट्र के लिए वन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो पर्यावरण को संतुलित बनाने में अहम भूमिका निभाती है। फिर भी इस जिला में वनों का अभाव है। ज्यों–ज्यों जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, त्यों–त्यो वनों

का ह्रास होते जा रहा है। लोग जंगलों को काट कर घर एवं कृषि कार्य के लिए खेत बनाने के क्रम में बड़ी ही तीर्व गति से जंगलों को काट रहे हैं। कुछ ही वर्षो में ऐसी गति रही तो वनों का पूर्ण विनाश ही हो जाएगा, जो की पर्यावरण के लिए बड़ा ही खतरनाक साबित होगा। पृथ्वी पर मानव स्वच्छ वायु के लिए तड़प–तड़प कर मर जाएँगें। अतः शीघ्रताशीघ्र ही सरकार को वन की कटाई को रोकने के लिए कठोर कदम उठाना पड़ेगा नही ंतो यह पृथ्वी वृक्ष विहिन हो जाएगी।

उसर और कृषि योग्य परती भूमि

खगड़िया जिला के सभी अंचलों अलौली, बेलदौर, चौथम गोगरी, खगड़िया, मानसी और परबत्ता में उसर और कृषि योग्य परती भूमि है। उसर एवं कृषि योग्य परती भूमि का क्षेत्रफल 9,90 है। कुल उसर और कृषि योग्य परती भूमि में सर्वाधिक अलौली अंचल 23.03 प्रतिशत और सबसे कम मानसी अंचल 610 हेक्टेयर (4.11) प्रतिशत है। इस प्रकार कुल अंचलों में उसर एवं कृषि योग्य परती भूमि का क्रम इस प्रकार है– अलौली 23.03 प्रतिशत, खगड़िया 18.14 प्रतिशत, परबत्ता 17.06 प्रतिशत, गोगरी 16.93 प्रतिशत, बेलदौर 11.46 प्रतिशत, चौथम 9.27 प्रतिशत, और मानसी अंचल 4.11 प्रतिशत, है। उसर एवं कृषि योग्य परती भूमि को ग्रामीण विकास योजनाओं के तहत् कृषि योग्य भूमि में बदला जा रहा है। इस प्रकार की जमीन भूमि सुधार, जवाहर रोजगार योजना आदि कार्यक्रमों द्वारा मानव हित के लिए उपयोगी बनाया जा रहा है। इस प्रकार के बदलाव से तत्काल मानव हित हो सकता है। लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण असंसुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो मानव के लिए कष्टदायक साबित हो सकता है।

गैर कृषि कार्यो में लगाई गई भूमि

इसके अन्तर्गत जिला के कुल क्षेत्रफल का 22800 हेक्टेयर भू–भाग उपयोग हो रहा है, जिसमें सड़क, मकान, पथरीली भूमि, मैदान एवं जल क्षेत्र आदि आते है। कुल गैर कृषि कार्यो में लगाई गई भूमि स्थल क्षेत्र के रूप में खगड़िया, गोगरी, परबत्ता और अलौली अंचलों में है, जबकि अन्य स्थान पर बेलदौर, चौथम और मानसी में है, जबकि अन्य स्थान पर बेलदौर, चौथम और मानसी अंचलों में कम उपयोग हो रहा हैं। वहीं खगड़िया जिला के कुल गैर कृषि कार्यो में लगाई गई भूमि में सर्वाधिक खगड़िया 4596 हेक्टेयर 20.16 प्रतिशत, दूसरे स्थान पर गोगरी अंचल 18.61 प्रतिशत, परबत्ता 17.06 अलौली 16.28 प्रतिशत बेलदौर 12.40 प्रतिशत, चौथम 10.08 प्रतिशत और सबसे कम मानसी 5.43 प्रतिशत के साथ है। मौसमी जल क्षेत्र के अन्तर्गत नदी, नाले और वर्षा का जल आदि आते है, जिसके द्वारा सिंचाई होती है, जो मात्र वर्षा मौसम में ही उपयोग होता है।

कृषि योग्य बंजर भूमि

कृषि योग्य बंजर भूमि के अन्तर्गत खगड़िया जिला का कोई भी भूमि नहीं आते है। अर्थात् खगड़िया जिला में इसका क्षेत्र नगण्य है। ऐसी जमीन उबड़–खबड़ और गैर–मजरूआ होती है, जिसे उपजाऊ भूमि बनाने हेतु प्रखंड स्तर पर चलाये गए ग्रामीण विकास योजनाओं के तहत पूरी कोशिश किया जाता रहा है। खगड़िया का अधिकांश भूमि पर सिंचाई की सुविधा है जिस कारण प्राकृतिक रूप से कृषि योग्य बंजर भूमि मौजूद नहीं है।

स्थायी चारागाह और अन्य गोचर भूमि

खगड़िया जिला के सभी प्रखण्डों में स्थायी चारागाह और अन्य गोचर भूमि है। 19.7 अलौली प्रखण्डों में 778280 हेक्टेयरों, 7414 हेक्टेयरों 7 प्रखण्डों में 7331.50 हेक्टेयर भूमि में है जो कुल स्थायी चारागाह अैर अन्य गोचर भूमि के 18.57 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है। जबकि शेष प्रखण्डों में क्रमशः खगड़िया 6084.50 हेक्टेयर, वहीं सर्वाधिक कम मानसी में 2486.65 हेक्टेयर भू भाग पर

ऐसी भूमि हैं ऐसी समतल भूमि को पंचायत की ग्रामीण जनता खेल के मैदान और सुबह–शाम का नित्य–क्रिया रूप में उपयोग करते है।

इस प्रकार की भूमि प्रत्येक प्रखण्डों के प्रत्येक ग्राम में रहना जरूरी है। इससे पर्यावरण संतुलन में योगदान मिलता है। इस प्रकार की भूमि का क्षति बड़ी तीव्र गति से हो रही है। ऐसी भूमि को काट–छॉट कर कृषि योग्य भूमि बनाये जा रहे है, जो निश्चय ही वर्तमान परिपथ में चिन्तनीय विषय है। इसे रोकने के लिए न तो ग्रामीण जनता और न तो पंचायत–प्रमुख और न तो प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का ही इस ओर ध्यान आकृष्ट हो रहा है। ऐसी स्थिति में इस प्रकार की भूमि दिनों–दिन घटती जारी है, जिससे गांव और समाज की स्थिति बदतर हो रही है, क्योंकि मनुष्यों को न तो टहलने का जगह और न तो बच्चों के खेलने का जगह रहने से मानवीय विकास की क्रियाएँ अवरूद्ध हो रही है।

विविध वृक्ष फसलें एवं गाछी

खगड़िया जिला के कुल क्षेत्रफल में 1870.64 हेक्टेयर भू–भाग पर विविध वृक्ष फसलें एवं गाछी विस्तृत है, जो कि कुल क्षेत्रफल का प्रतिशत है। इसके अन्तर्गत जिला का सभी प्रखंड आते हैं। परबत्ता प्रखंड 684.62 हेक्टेयर भाग पर विस्तृत होकर जिला में सर्वप्रथम है इसके बाद यह भूमि अलौली, गोगरी, बेलदौर, मानसी और चौथम प्रखण्ड में फैला हुआ है। सर्वाधिक न्यूनतम खगड़िया प्रखण्ड में है जो कि मात्र 55 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला हुआ हैं, जो नाम मात्र है।

अन्य चालू परती भूमि

भूमि का कुछ भाग किसी कारणवश कभी–कभी वर्ष भर परती रह जाती है, यानि एक वर्ष तक रह गए परती भूमि को चालू परती भूमि कहते है, जबकि दो से पाँच वर्ष तक रह गए परती भूमि को अन्य परती भूमि कहते है। खगड़िया जिला में मात्र अन्य परती भूमि है। जो कि कुल 1961.15 हेक्टेयर भू अर्थात् 1.31 प्रतिशत क्षत्रफल में फैला है। खगड़िया प्रखण्ड भाग पर विस्तृत है यह भूमि सर्वाधिक में है। बेलदौर में 5208.35 जो कि 6879.02 हेक्टेयर क्षेत्रफल में विस्तृत शेष प्रखंड में क्रमशः बेलदौर में 5208.35 हेक्टेयर, गोगरी में 3204.66 हेक्टेयर, परबत्ता में 2849.35 हेक्टेयर और चौथम में 1144.16 हेक्टेयर है। नाम मात्र स्थान रखने वाले प्रखण्डों में क्रमशः अलौली प्रखण्ड 525.14 हेक्टेयर अैर सर्वाधिक न्यूनतम मानसी प्रखंड में 150.47 हेक्टेयर में है। हर वर्ष भिन्न–भिन्न कारणों से भूमि परती रहती है, जिस कारणों का निश्चित नहीं हैं इस प्रकार की भूमि का धीरे–धीरे अभाव होते जा रहा है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्र

खगड़िया जिला में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में विभिन्न प्रकार के भूमि उपयोग के कुल योग को घटाने पर जो शेष बचता है उसे शुद्ध बोया हुआ क्षेत्र कहा जाता है। यह जिला के कुल क्षेत्रफल का 104000 हेक्टेयर 69.50 प्रतिशत भू–भाग पर विस्तृत है। सर्वाधिक N.S.A. अलौली वित्तीय स्थान गोगरी, और तृतीय स्थान खगड़िया प्रखण्ड का हैं। जो मानचित्रीय अध्ययन से स्पष्ट हैं। सर्वाधिक न्यूनतम भूमि मानसी प्रखण्ड में है।

इस प्रकार के भूमि उपयोग विश्लेषण से यह पता चलता है कि किस प्रकार की भूमि कहाँ है और कैसी फसल उपज होती हे। इससे यह भी जानकारी मिलती है कि प्रकृति प्रदत्त कितनी भूमि उपयोग की जा रही हैं और कृत्रिम विधि द्वारा मानव कितना भूमि–उपयोग कर रहा है और कितना भविष्य में कर सकता है। जो उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट है।

संदर्भ–सूची :

1. फाक्स, जे0 डब्ल्यू0 (1956) : 'लेण्ड यूज सेर्वे, जनरल प्रिंस्पिल्स एण्ड ए न्यूजीलैण्ड एक्जाम्पिल, आकलैण्ड, यूनिवर्सिटी कॉलेज बुलेटिन, पृ0 – 49.
2. बुड, एच0 ए0 (1972) : 'ए क्लासीफिकेशन ऑफ एग्रीकल्चरल लैण्ड यूज, फोर डेवलपमेंट प्लानिंग, इन्टरनेशनल ज्योग्राफी' (22, आई0 जी0 यू0, कनाडा), यूनिवार्सिटी ऑफ टोरन्टो प्रेस पृ0 – 1106.
3. बेनजटी, सी (1972), ''लेण्ड यूज एण्ड नेचुरल वेजीटेसन, इन इन्टरनेशनल ज्योग्रफी'' इडिटेड वाई डब्लू0 पेंटर आदमस एण्ड फेडरिक, एम0 हेलिनर, टोरन्टो यूनिवर्सिटी, पू0 1105–1106
4. चौहान, डी0 एस0 (1966), ''स्टडीज इन यूटीलाइजेसन ऑफ एग्रीकल्चरल लेण्ड, अग्रवाल एण्ड क0, आगरा पृ0 – 22–24
5. Buck J.L. (1937): "Land Utilization in china", Nanking University press, 1937
6. पाण्डेय, एस0 एन0 (1980) : ''भूमि एवं भूमि–उपयोग'',भागलपुर विश्वविद्यालय से प्रकाशित पत्रिका, 'चम्पा' में, पृ0–42